1 वर्षा-बहार

ऋतुओं में वर्षाऋतु का अपना विशेष महत्त्व है, क्योंकि वर्षा धरती को हरा-भरा बनाकर उसे जीवन प्रदान करती है। उससे वनस्पति और प्राणिजगत में बदलाव आता है। इस कविता में जीवों और वनस्पतियों के वर्षा-काल के उल्लास और आह्लाद के साथ ही आकाश, बादल और बिजली की सुंदर छवियों का चित्रण किया गया है।

वर्षा-बहार सबके, मन को लुभा रही है
नभ में छटा अनूठी, घनघोर छा रही है।

बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं
पानी बरस रहा है, झरने भी ये बहे हैं।

चलती हवा है ठंडी, हिलती हैं डालियाँ सब,
बागों में गीत सुंदर, गाती हैं मालिनें अब।

तालों में जीव-जलचर, अति हैं प्रसन्न होते
फिरते लखो पपीहे, हैं ग्रीष्म ताप खोते।

करते हैं नृत्य वन में, देखो ये मोर सारे
मेंढक लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे।

खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है
बागों में खूब सुख से, आमोद छा रहा है।

चलते हैं हंस कहीं पर, बाँधे कतार सुंदर
गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहर।

इस भाँति है अनोखी, वर्षा-बहार भू पर
सारे जगत की शोभा, निर्भर है इसके ऊपर।

— ***मुकुटधर पांडेय***

Scanned with CamScanner

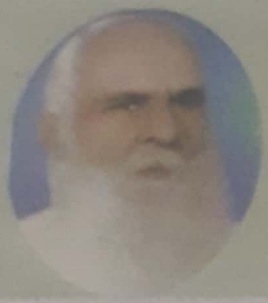

कवि परिचय : मुकुटधर पांडेय का जन्म छत्तीसगढ़ राज्य में बिलासपुर जिले के बालपुर गाँव में हुआ था। ये छायावादीयुग के प्रवर्तक कवि हैं। इनकी भाषा सरल एवं परिष्कृत है। इन्होंने निबंध एवं आलोचना ग्रंथ भी लिखे। इन्हें हिंदी साहित्य सम्मेलन का सम्मान प्राप्त हुआ। *पूजा-फूल, शैलबाला, लच्छमा, हृदयदान* तथा *परिश्रम* इनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं।

अभ्यास के लिए

शब्दार्थ

वर्षा-बहार - बरसात की शोभा; **छटा** - शोभा, छवि, दीप्ति; **अनूठी** - अद्‌भुत, अनोखी
घनघोर - बहुत घना, ज़बरदस्त, गहरा; **लखो** - देखो; **पपीहे** - चातक पक्षी;
सुगीत - अच्छे गाने; **सौरभ** - सुगंध; **आमोद** - हर्ष, प्रसन्नता; **कतार** - पंक्ति;
मनहर - मन को हर लेना; **जगत** - संसार; **निर्भर** - आश्रित

गीत की बात

Scanned with CamScanner